गोसाईंदास

गोसाईंदास का जन्म बस्ती ज़िले के चेतिया नामक ग्राम में फाल्गुन मास अमावस्या सम्वत् 1929 को ब्राह्मण वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम ब्रह्ममणि और माता का नाम सुमित्रादेवी था। इनके छोटे भाई का नाम अहलाद दास था।

पति के दिवंगत होने पर माता अपने दोनों पुत्रों को लेकर मायके सरैंया (बाराबंकी) आकर रहने लगीं। ये पढ़े-लिखे नहीं थे। किन्तु भगवद्-कृपा से इन्हें हिन्दी, उर्दू का ज्ञान था। ये समर्थ साईं जगजीवन साहेब दीक्षा ग्रहण कर साधनारत् हुए। साहेब के प्रथम शिष्य थे। गुरू आज्ञा से सरैंया आकर साधनारत् हुए। किन्तु दुष्टों ने साधना में विध्न पहुँचाया। अतः अपना गाँव छोड़कर कमोली (बाराबंकी) में आजीवन रहकर साधना की। इन्होंने वैवाहिक जीवन न व्यतीत कर जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया।

इससे इनकी ख्याति चतुर्दिक फैल गयी। स्वभाव से सरल, मृदुभाषी, सत्यपथगामी थे। चढ़ाव से प्राप्त धन का प्रयोग स्वयं न करके साधु-सन्तों की सेवा में, अतिथ्य सत्कार में लगाते थे। सबको समान समझते थे। जातीय बन्धन, और मोह-माया से मुक्त थे।

आप सम्वत् 1533 विक्रमीय (कार्तिक अमावस्या) को ब्रह्मलीन हुए। आप की समाधी कमोलीधाम में सतगुरू अभरन के दक्षिण स्थित है, जिसकी परिक्रमा करके भक्तगण संकटमुक्त होकर मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं। महीने के प्रत्येक मंगलवार तथा पूर्णमासी को यहां मेला लगता है जिसमें श्रधालुओं की अधिक भीड़ होती है। इनके छोटे भाई अहलाद दास के वंशज आज भी कमोली धाम में निवास कर रहे हैं। आपके चार प्रमुख शिष्य थे-

1. अखलासी दास (क्षत्रिय) ग्राम-कॉटेमीरपुर ।
2. झामदास (ब्राह्मण) ग्राम-पूरेझामदास का पुरवा।
3. नरिन्द्रा दास (क्षत्रिय) मंजिनावां।
4. दरियावदास (क्षत्रिय) ग्राम-सुरवारी।

गोसाईंदास ने पर्‌म तत्व को सर्वव्याप्त घट-घटवासी माना है। उनका कहना है कि प्रभू की असीम कृपा से सब कुछ बन जाता है। उन्होंने पर्‌म तत्व को राम, पिय, साईं, दयानिघि, भगवान, प्रभु, अविनासी आदि नामों से स्मरण किया है। उनके अनुसार संसार नश्वर है, सम्पूर्ण जगत माया के वश में है। उनका दृढ़ विश्वास है कि केवल प्रभू-कृपा से ही माया से परे हो पाना संभव है।

गोसाईंदास की नामोपासना में बड़ी आस्था है। उनका कहना है कि ''बौरे गुप्त नाम घुनि लाउ'' अर्थात् गुप्त रूप से नाम घुनि सुनना चाहिए।

उनके अनुसार नाम को अष्टयाम निस-दिन अजपा जाप जपना चाहिए। (अजपा जाप जपहु निरंतर, बिसरै न आठो जामा)

गोसाईंदास ने सतगुरू के महत्व- कृपा पर अधिक बल दिया है। उनके अनुसार गुरू-प्रभु का अवतार ही है, क्योंकि गुरू अनेक संकटों को दूर करके भवसागर से पार कर देता है-गुरू को मनु जनि मानिए, गुरू निज अवतारा। अगणित संकट काटिकै गुरपार उतारा।

सम्प्रदाय अन्तर्गत गोसाईंदास की कई रचनाओं की चर्चा की जाती है, किन्तु 'दोहावली', शब्दावली दो रचनाएं उपलब्ध हैं। गोसाईंदास ने अवधी में भाव प्रकट किया है। रचनाओं में अन्य भाषाओं के शब्दों का भी समावेश हुआ है। किन्तु भाषा सरल, सहज बोधगम्य है। भाव-कला का भी उभरा हुआ रूप परिलक्षित होता है।

गोसाईंदास की वाणी लोक कल्याणार्थ एवं सदुउपदेशों के लिए सदैव अमर रहेगी।

1. सुगना बोलना यक नाम।
जाति पांति कुल न जानेहुँ, प्रीति की बसि स्याम।
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक , नामहि ते परिधान।।
साधु संत मुनि वेद पुकारै, साषी सब्द प्रमान।
'गोसाईंदास' तहँ सुरति रमावै, जहँ छाही न घाम।
2. गुरू को ड़ंका बंका बाजै समुझि बूझि भजि सोई।
जोगी जंगम तप सन्यासी तिरथ बरत कै धावै।।
दाया बिना धरम नहि बेधै, नाम बिन मुक्ति न होई।
अगम अपार चरित निज पिय को बरनि सकै नाहिं कोई।।
ब्रह्मा विष्णु सिव सारद नारद अबरन कहत है सोई।
करता हरता भरता पोषण, बेलसै भोगवै सोई।।
सबमें नवै सबै सो न्यारा, निरषै बिरत्ना कोई।
'गोसाईंदास' गुर चरन सीस दै, सदा सिद्धि सुम होई।।

दूलनदास

सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवन साहेब के परम् शिष्य दूलनदास का जन्म सम्वत् 1717 रायबरेली जिलान्तर्गत तहसील- महाराजगंज, परगना-सेमरौता, मुरैनी ग्राम के निकट तदीपुर में हुआ था, जिसे तबियतपुर या ताजुद्दीन भी कहते हैं। इनके पिता का नाम रायसिंह था। ये सोमवंशी क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए।

अन्य निर्गुणपंथी संतों की भाति ये पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु स्वाध्याय से इन्हें हिन्दी का ज्ञान प्राप्त हुआ।

इनके दीक्षा गुरू समर्थ साईं जगजीवन साहेब थे। दीक्षोपरान्त अधिक समय तक कोटवाधाम में रहकर गुरू सेवा करते हुए साधनारत् रहे। किन्तु गुरू आज्ञा से रायबरेली के धर्मधाम में आजीवन रहकर साधना की।

सतगुर जगजीवन कृपा भई, जन दूलन चरनन्ह लपटाना रे।

उन्होंने जीवन पर्यन्त विवाह न करने का निश्चय किया था किन्तु गुरू आज्ञा से वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। कुछ समय उपरान्त रामबक्शदास और एक पुत्री उत्पन्न हुई। किन्तु अल्प आयु में ही (रामबक्शदास) दिवंगत हो गए। रामबक्शदास निःसंतान थे। अतः उन्होंने बखतबली को (तदीपुर से) गोद लिया था। रामबक्श के सुत एक न जाये। बखतबली लै गोद खेलाये। इस समय भदौरिया जी तथा राठौर जी धर्मेधाम में पीठाधीश्वर के रूप में तपश्चर्या में प्रवृत्त हैं। व्यवस्था ठीक ढ़ंग से चल रही है। धर्मेधाम से एक किलामीटर की दूरी आप द्वारा निफह पर कर्मदाह नामक एक सरोवर है। जो कर्मदही के नाम से भी जाना जाता है। जनश्रुति अनुसार मात्र एक बार भी सरोवर में स्नान करने पर जीवनभर का पाप नष्ट हो जाता है। उन्होंने जीवन के अन्तिम क्षण तक धर्मे में रहकर साधाना की। उनके शरणागत होने वालों की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। यथा

दूलन देवीदास में ख्याम गोसाईंदास।
जे इनकी सरन गे तिन्ह कै पूजी आसा।।
जो भी अंधे, लूले, लंगड़े आदि इनकी शरण में जाते थे
उनको उचित स्थान प्रदान करके उचित सेवा करते थे।
सत्तनाम सम्प्रदाय में दूलन के सिरमौर ।
अंधे, लूले, लंगड़े सबको दीना ठौर।।

सत्तनाम सम्प्रदाय में धर्मेधाम का बहुत अधिक महत्व है। ऐसा कहते हुए लोगों द्वारा कहा जाता है कि-

जो न गया धर्मे, तो क्या हुआ जग के भर्मे।

साधनास्थली पर तप करते हुए 118 वर्ष की आयु में सम्वत् 1534 में आपकी मृत्यु हुई। मृत्युपरान्त आप की समाधि आज भी धर्मेधाम में विद्यमान है। यहाँ प्रत्येक पूर्णिमा तथा कार्तिक पूर्णिमा को वृहत मेले का आयोजन होता है। समाधि दर्शन करके भक्तगण मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं।

दूलनदास उच्च कोटि के नामोपासक थे। 'दूलन जो सतनाम ते लाउनेह निस्तूक कहकर उन्होंने सतनाम स्मरण को मूलमंत्र माना है। इन्होंने ब्रह्म को अवरण, अकह, अनादि, अरूप, अनूप मानकर निर्गुण, निराकार, ब्रह्म की उपासना की है। उनका कहना है कि भक्तों की रक्षा हेतु वह देह धारण करता है।

सम्प्रदाय अन्तर्गत इनके चार प्रमुख शिष्य बताये जाते हैः-

1. सिद्धदास (ब्राह्मण) हरगाँव, जिला-सुल्तानपुर, (उ0 प्र0)
2. तोंवरदास (क्षत्रिय) तदीपुर जिला-रायबरेली, (उ0 प्र0)
3. ढ़ाकूदास (कुम्हार) ग्राम-बैना, बिहार
4. घासीदास, ग्राम-गिरोदपुरी जिला रायपुर।

इनके द्वारा विरचित 1. दोहावली 2. शब्दावली 3. भ्रमविनाश 4. निर्गुण ब्याह विधान, 5. गंगाष्टक, 6. स्तुति महावीर जी की आदि रचनाएं हैं, जिनका मुख्य विषय अध्यात्म है। इन्होंने अवधी भाषा में भाव प्रकट किया है। रचनाओं में 'यत्र-तत्र' अन्य भाषाओं के शब्दों को भी प्रयोग में लाया गया है। इनकी वाणियों में भाव-कला कौशलपूर्ण सामंजय दृष्टिगोचर होता है।

1. धनि मोरि आज सुहागिल घड़ियाँ
   संत आज मोरे आँगन चलि आये। कौन करौ महिमनिया ।।
   निहुरि निहुरि मैं अगना बहारौ । मातों मैं प्रेम लहरिया।
   भाव के मात प्रेम के फुलका। ज्ञान की दाल उतरिया।।
   दूलनदास के साहेब जगजीवन। गुरू के चरन बलिहरिया।।
2. कोई यहि विधि बिरला नाम कहै।
   मंत्र अमोलक नाम दुइ अच्छर। बिन रसना रट लागि रहै।।
   ओठ न ड़ोलै जीभ न बोलै। सुरति धरनि दिढ़ाइ रहै।।
   दिवस रेने रहै सुधि लागी। यह माला सह सुमिरन है।
   दूलनदास के साहेब जगजीवन। ता की नाव पार निबहै।।

सत्तनामी संत देवीदास

सत्तनामी सम्प्रदाय में संत देवीदास जी को सादर ससम्मन स्मरण किया जाता है। इनका पदार्पण बाराबंकी जिले में लक्ष्मणगढ़ नामक ग्राम में सम्वत् 1735 भाद्रपद वदी आठ दिन मंगलवार को हुआ था। इनके पिता भवानी सिंह संत प्रकृति थे। इनका जन्म गौड़ वंशीय क्षत्रिय कुल में हुआ था । इनके गुरू सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक संत जगजीवन साहेब थे। गुरोपदेश प्राप्त करने के बाद लक्ष्मणगढ में साधना किये। किन्तु ग्राम के दुष्टों द्वारा साधना में बाधा पड़ने के कारण गाँव को त्याग कर स्वयं अपने नाम पर देवीदास पुरवा की स्थापना लगभग सम्वत् 1719 के आस-पास करने के बाद जीवन भर यहीं रह कर साधना में लग गये। गुरूदीक्षा लेकर घर आये और अठारह दिन अन्न-जल कुछ भी ग्रहण न कर ध्यानमगन हो गये। इस स्थिति को देखकर लोग अधिक घबराये। असहाय हो कर लोग सतगुरू (जगजीवन साहेब) की शरण में जाकर सम्पूर्ण घटना को व्यक्त किया। सतगुरू ने विभूति और मिष्ठान देते हुए उन्हें खाने को दिया। प्रसाद ग्रहण करते ही वे चैतन्य हो गये फिर उठ बैठे।

देवीदास जी ने गृहरूथ जीवन व्यतीत किया था। इनके राम प्रसाद दास, नीलाम्बरदास, रामनेवाजदास और अनूपदास चार पुत्र थे। विदेह राजा जनक की भाँति जीवन निर्वाह किया। इनके अनुसार योग के साथ भोग के महत्व पर भी बल दिया। यथा-

योगी योग सदा करै, भोगी भोग विलास।
योग भोग दोनो करै, तेहि भजु देवीदास।।

ये मोह-माया, जाति पॉति, वाह्याड़म्बर से विलग थे। गृह त्याग कर जंगल में रहते हुए तपस्या करने में इनका विश्वास न के बराबर था। -

जिनते बना न कुछ करते मकानन में।
डनते बनेगी कौन करतूति कानन में।।

इनके निम्नांकित चार प्रमुख शिष्य थे-

1. मंहत रामसेवक दास, हरचंदपुर, बाराबंकी
2. सोनादासी
3. नेहालचंदराय
4. गिरवरदास समर्थ साईं जगजीवन साहेब के वंशज सुप्रसिद्ध सिद्ध संत।

इनके अतिरिक्त-दिलवरदास, नन्दूदास, छोटेदास, भानादास, चार शिष्यों का उल्लेख भक्ति विनोद में हुआ है।

देवीदास ने परम ब्रह्म को निर्गुण-निराकार, अदृश्य, रूप-रेखाविहीन, अविनाशी, अजन्मा आदि के रूप में उल्लेख किया है। उनके अनुसार वह सब घट में निवास करता है और समयानुसार दुष्टों के संहार तथा अपने आराधकों की सुरक्षा की दृष्टि से अवतार ग्रहण करता है। उनका मानना है कि संसार में जीवन क्षण भंगुर है, क्योंकि कोई किसी का नहीं है। किसी भी समय काल अहेरी प्राण ले सकता है।

देवीदास ने नाम महात्म्य को सर्वाधिक स्वीकार किया है। उनके अनुसार नाम भजन-सुमिरन करके पाप मुक्त होकर जीव आवागमन से छुटकारा पा जाता है। उनका कहना है कि सतगुरू-कृपा से ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। देवीदास सम्वत् 1870 विक्रमी दिन मंगलवार (भादो वदी आठ) को ब्रह्मलीन हुए।-

सम्वत् अट्ठारह सौ सत्तर, लागे भादो मास।
मंगल कृष्ण अष्टमी, तनु तजि देवीदास।।

दिव्य रचनाएं- निम्नवत् हैं-

1. सुख सनाथ 2. विनोद मंगल 3. शब्दसागर 4. नारद ज्ञान 5. दीपक समाज 6. दोहावली 7. भ्रम विनाश 8. भ्रमर गीत 9. चरण ध्यान 10. वैराग्य वा कहिं 11. ज्ञान ऐना 12. भक्त मंगल 13. कहरानामा 14. काजीनामा 15. परवाना परतीत 16. गुरूचरन

इन ग्रन्थों में अवधि के सिवाय अन्य भाषाओं का भी प्रयोग हुआ है। भाषा बोधगम्य है।

श्रामनाम भजु हेत लगाई। तीन लोक देही मा।
तिरथ असनान करन कहँ जाई भाई।
हरि सुमिरन सब तीरथ भाई। कासी प्राग गंग जहँ जाई।। 2 ।।
सूरति गुदूरी लाल रंबाई। मनि मूरति का देउ वोढ़ाई ।। 3 ।।
जगजीवन देवीदास के साईं। भवर गुफा मा दीष अछाई।।। 4 ।।

संत ख्यामदास

सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब के चार पावा की संत परम्परा में ख्यामदास की गणना अच्छे संतों में की जाती है।

इनका जन्म ब्राह्मण (तिवारी) कुल में हुआ था। ये साक्षर नहीं थे। आप जीवनभर ब्रह्मचर्य रहे। इन्होंने बारह बर्ष अन्न, फल, दूध का आहार न करके नीम की पत्ती, मिर्चा खाकर कठोर तप किया। आप का शरीर निर्बल, दुर्बल हो गया। मांस गलकर शरीर का खून शनैः-शनैः घटकर कम हो गया। सब कुछ करने के बाद भी साधना पूर्णरूपेण सफल न हो पायी। इसी बीच आपकी तपस्थली में एक संत का आगमन हुआ। संत जी ने इनकी दशादेख कर कहा-

प्रभु जगजीवन सामरथ, लीला अगम अपार।
जे पद रज माथे धरयो, ते दुख सुख के पार।।

संत की वाणी का इनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। तुरंत उठकर गुरूदीक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से समर्थ साईं जगजीवन साहेब के सम्मुख उपस्थित होकर (नतमस्तक हो गये) समर्थ जी ने ख्याामदास को कंठ से लगा लिया, और गुरूदीक्षा (बीज मंत्र) देकर अन्न-जल ग्रहण कराया। समर्थ साईं जी के युगल चरणों में शीश झुकाते हुए बन्दगी करके ख्यामदास ने कहा-

''मैं तू हुआ, मैं देह हुआ, तू प्राण हुआ। अब कोई न कह सके, मैं और हूँ तू और है।'' इस प्रकार गुरू और शिष्य में अभिन्नता हो गयी, कोई अन्तर नहीं रह गया।

दीक्षोपरान्त ख्यामदास जी मधनापुर हरसकरी आकर साधनारत हो गये। इनके सगे भतीजे साहेब पुरईदास अहर्निश सेवा में लगे रहे। एक बार कुछ संत आकर तपोभूमि पर रूकना चाहे। संयोगवश अतिथि भक्तों के सत्कार के लिए कुछ नहीं था। ऐसी दशा में पुरईदास जी की माता ने ख्यामदास से करबद्ध होकर कहना चाहा, तुरन्त ख्यामदास जी ने कहा-

कपड़ा चुकै मगहर से आवै, जहँ कबीर साहब विनत चिकनिया।
खर्चा चुकै कोटवन से आवै, जहँ गुरु साहब मोरे हैं धनिया ।।
ख्यामदास के सतगुरु साईं, पूरन करिहैं सबही कमियाँ

स्वामी जी की कृपा से भोजन सामग्री कपड़ा धन सब आने लगा। अनवरत भण्ड़ारा होने लगा कोई भी आने वाला बिना प्रसाद के वापस न जाता। यथा-

हरि सकरी मॉ भक्ज जन आवै, बिना प्रसाद लउट नहिं पावे ।।

डनके अनुसार ब्रह्मम निर्गुण घट-घट वासी है। भक्तो के लिए देह धारण करता है।

ख्यामदास की नामोपासना में अधिक आस्था थी। उनकी दृष्टि में तीर्थ, व्रत करने के बाद भी बिना नाम सुमिरन किये जीव को मुक्ति पाना कठिन है। उन्होंने सत्संग और अजपा जाप को साधना का मूल तत्व माना है। उन्होंने सतगुरू महात्म्य को स्वीकारा है। उनकी अनेक

रचनाओं की चर्चा होती है, किन्तु 'काशी काण्ड़' शब्दावली प्राप्त है। रचनाओं में अवधी के साथ-साथ कई भाषाओं को अपनाया गया है।

मन ऐसे नाम की करू भजन।
जैसे सुमिरहि संत जना रा रमि राम रहै घट भीतर ड़ोलैना रसना।।
टोपी गुदरी तिलक छाप यह सब है, पेषना।
दिढ़ होई आसन मारि कै सुमिरहु कानन दै ढ़कना।।
झूठ कहे ते झूठै सुनि कै जैसे रयनि सपना।
सॉचे राम रामजन सॉचे सॉचेन है भजना।।
गुरू के चरन रज लावै नैनन्ह सुझै याहि अजना।
दास ख्यााम सत दरस निहारो अद्‌भुत छवि रचना।।
सजन अपने पास ही मैं लषै नु पायउं हो।
लषेउ न कबहूँ आप मा अनते उठि धाउउ हो।
जहँ जहँ नयनन्ह सूझा तहाँ तकि फिरि आयो हो।।
दुषित रहेउ देषे बिना केहि दरद सुनावौ हो।
कासी प्राग द्वारिका कहँ कहँ ठहराउएउॅ हो।
चरन कवल हृदै बसै नाही बिसरएउॅ हो।
सतगुरू साहेब सामरथ उन्हें अरज सुनाएउॅ हो।
दासख्याम अपनाइ ले अंतर लै लाएउं हो।।

अहलाद दास

अहलाद दास समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब के वंशज (भतीजे) थे। इनका जन्म सरजू तटवर्ती गाँव सरदहा में हुआ था। इनके पिता का नाम पृथ्वी सिंह था। ये पढ़े-लिखे नहीं थे। किन्तु सतगुरू की कृपा से अरबी का बहुत अच्छा ज्ञान हो गया। एक बार फारसी में लिखा एक पत्र आया। सतगुरू ने इन्हें पढ़ने का आदेश दिया। अरबी- फारसी से अनभिज्ञ होते हुए गुरूकृपा से इन्होंने पत्र को पढ़ा। बाद में ये फारसी नबीस हो गये। समर्थ साईं जी से दीक्षा ग्रहण कर आजीवन सतगुरू सेवा करते हुए कोटवाधाम में रहकर साधना में प्रवृत्त हुए। ये साहब कें सच्चे परम भक्त थे। मिष्टभाषी और सरल प्रकृति थे।

अहलाद दास ने परम ब्रह्म को निराकार के अतिरिक्त राम, करतार, ईश्वर, साईं-प्रभु आदि नामों से स्मरण किया है।

उनके अनुसार संसार मिथ्या है, स्वप्न के समान है। उनका कहना है कि माया बड़ी प्रबल है। इससे बच पाना कठिन है। केवल सतगुरू कृपा और प्रभु की दया से ही माया से छुटकारा पाना संभव है।

अहलाद दास ने गुरू महत्व और नाम आराधना पर अधिक बल दिया है। उनके अनुसार नाम स्मरण से बुरे कर्म से बचाव हो जाता है और नाम रूपी नौका पर सवार होकर भव पार जाना सरल हो जाता है। उनका कहना है कि काम, क्रोध, मद, लोभ, तृष्णा से मुक्त होकर सुमिरन-भजन करने वाला ही परम संत है।

योग के संबंध में उनका निम्नवत् कथन अवलोकनीय है-

जोगी जोग कम कछु करै। काम क्रोध मिस्ना परिहरै।।
कर्महिं कर्म होइ निहकर्म। संसै सोक न व्यापै मर्म।।
ग्यान गुरू मन चेता करै। सुन्य मण्ड़ल में सूरति धरै।।
नैन श्रवन सुधि बुधि तेहँ राषै। बिन मुष मंत्र सुनै औ भाषै।

उनका कहना है कि साधक को मान, बड़ाई, स्तुति, निन्दया आदि त्याग देना चाहिए, क्योंकि ये सब साधना में बाधा पहुँचाते हैं। साधक को सहज साधना करनी चाहिए। उनका कहना है कि सहज जीवन यापन करते हुए सत्यनाम स्मरण करना साधक के अच्छे गुण हैं। उनका मानना है कि सोते-जागते, उठते-बैठते राम नाम को सर्वदा सुमिरन मन से करना चाहिए। अहलाद दास की तीन रचनाएं-

1.शब्दावली 2. ग्यान-चेतक 3. गीतावानी के अतिरिक्त रोवता, झूलना, कनित्त, साखी भी प्राप्त है।

संत कवि की कृतियों में हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया गया है। किन्तु अवधी भाषा का प्रयोग अधिक हुआ है। भाषा का प्रवाह सहज और सरल है।

भजन

रहु मन सहज ड़ोरि लगाई।
तिरथ बरत जप नेम निसदिन नाम बिसरि न जाय।।
सेवत जागत चलत बैठे रहहु सुरति समाइ।
तजि गरूर गुमान मन ते चलहु करि दिनताई।।
करहु जनि बहु लोभ तिसुना आस जग बिसराउ।

जाहि की यह सकल माया ताहि रहु लौ लाई।।
जन हितकारी आयु समरथ देत नहिं बिसराइ।।
दास का जब दुष्य भा तव तहाँ भयो सहाइ।।
प्रभु जगजीवन कहेउ बानी बार बार सुनाइ।
नाम भजु अहलाद मनमा छोड़ि दे दुचिताइ।।
मझधरवा परी राम मोरी नैया।
बिन गुन पार लगै कस सूजनी षेवनहारा सिरजैया।
भारी भार धार अति गहिरी झोकत पुरबिल पुरवैया।।
जन अहलाद के प्रभु जगजीवन अब तजि धावौ अल सैया।।

उदयराम दास

सत्तनामी संत उदयराम दास का जन्म बाराबंकी जिले में गोमती के किनारे स्थित हरचन्दपुर नामक ग्राम में हुआ था । उनके पिता नरोत्तमदास जी ईश्वर के परम भक्त थे। ये ब्राह्मण वंश अवंतस थे।

इन्होंने सतूनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक सरदहा ग्राम में उत्पन्न कोटवाधाम के समर्थ साईं जगजीवन साहेब से दीक्षा लेकर साधना की। दीक्षोपरान्त अपने से सबको श्रेष्ठ मानकर अधिक सरल हो गये। उदयराम दास ने स्वामी जी के पास आकर जबसे मंत्र लिया मस्ताने हो गये, दिन-रात उसी आनन्द में डूबे रहते थे। एक मरतबा स्वामी जी के मुखार बिन्द से सुना कि भक्ति नम्रता केक अधीन होती है। उस दिन से ऐसी नम्रता अखत्यार की कि नम्रता का स्वरूप बन गये। तमाम संसार को अपने से बड़ा मान लिया और उम्रभर कोई बात किसी को नहीं कही, बल्कि किसी को जोर से नहीं पुकारा।

गुरू आज्ञा से घर परिवार में रहते हुए उन्होंने कठोर साधना की। इनके रामसेवक दास तथा नन्दूदास दो पुत्र थे। इनकी नाम साधना में बड़ी आस्था थी।
सतूनामी सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में सर्वदा लगे रहे। अजपा जाप, सुमिरन, ध्यान, भजन इनकी साधना का मूल आधार थे।

बहुत पता लगाने पर भी इनका साहित्य उपलब्ध न हो सका केवल तीन भजन ही उपलब्ध हो पाए हैं। भजनों में नामोपासना, सुरति शब्द योग का निरूपण किया गया है। इन्होंने अवधी भाषा को भाव प्रकट करने के लिए अपनाया है।

नेवल दास

सत्तनामी सम्प्रदाय के संतों में नेवलदास उच्च कोटि के सिद्ध संत थे। मंहत जगन्नाथ बक्शदास ने 'सुख सागर' (नेवलदास कृत) की भूमिका में उल्लेख करते हुए इनका जन्म गोण्ड़ा जिले में अनुमानतः सम्वत् 1780 माना है। इसे (भक्त शिरोमणि हिन्दी मासिक पत्रिका अगस्त 1858 पृ0 5) कृष्ण मुरारीदास ने भी माना है, किन्तु सम्प्रदाय अन्तर्गत इन्हें उमापुर नामक ग्राम में उत्पन्न माना जाता है।

यद्यपि ये पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु गुरू कृपा से हिन्दी, संस्कृत में पारंगत हो गये। काशी नरेश ने शास्त्रार्थ में विजयी होने पर इन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। पुनः काशी में एकत्रित सभी विद्वानों को पराजित कर स्वर्णपदक प्राप्त किया था।

आप समर्थ साईं जगजीवन साहेब से गुरू मंत्र प्राप्त कर साधना में प्रवृत्त हुए। इन्होंने ग्रहस्थ जीवन यापन किया था। आपके एक पुत्री थी, जिसका विवाह भारद्वाज गोत्रीय अम्बरदास जी के साथ हुआ जिनके वंशज आज भी उमापुर गद्दी पर विराजमान हैं। कुछ समय तक बाराबंकी सुलतानपुर जिले की सीमा पर स्थित गोमती नदी के किनारे रेछ घाट में रहकर तपस्या की थी। किन्तु प्रतिकूल वातावरण के कारण यहाँ से आकर सुलतानपुर जिले के दक्षिण धनेसा ग्राम में एक वट के पेड़ के नीचे एक कुटी बनाकर नामोपासना में रत हुए। किन्तु धनेसा के रहने वालों के व्यवहार के कारण इस स्थान को छोड़कर आजीवन उमापुर में निवास किया। सदा एकांत में रहकर रात-दिन अखण्ड़ भजन करते थे। उठते-बैठते, सोते-जागते, अजपा जाप में लीन रहते थे। धरन में शिखा को बांधकर नाम स्मरण में अभ्यस्त थे।

जनश्रुति अनुसार इनके कई चमत्कार हैं। एक बार गाँव में बारात आकर इनके बाग में रूकी। रात में चोरों ने इनका बॉस काटकर बैलगाड़ी से ले जाना चाहा, किन्तु ले न जा सके, प्रातः काल हो गया।

घटना को सुनकर नेवलदास गये। चोरों को पूरा बॉस देकर उन्हें चोरी न करने का उपदेश दिया। उस दिन से चोरी न करने की शपथ लेकर लोग चले गये।

सत्गुरू से अनवरत स्मरण करके तीन दिन में ही आपको सिद्धि प्राप्त हो गयी। आपके दिवंगत होने के बाद उमापुर में समाधिश्त हुए। प्रतिदिन संध्या वंदन-आरती की व्यवस्था है और प्रसाद वितरण भी किया जाता है। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की है। उनके अनुसार माया बड़ी बलवान है, उसके वश सभी सुरवर, मुनि हैं। इससे कोई बच न पाया। उनका कहना है कि सबको काल का ग्रास होना है, किन्तु नाम स्मरण करने वालों पर काल का प्रभाव कम पड़ता है। उनके अनुसार अजपा जाप ही साणना का श्रेष्ठ माध्यम है-यथा

रसना मुष माला बिना करै जो सुमिरन कोइ।

दास नवल अजपा वहै सिद्धि जगत में होइ।।

डनका कहना है कि तप, तीर्थ, व्रत, साधना, सत्तनाम के तुलना में नगण्य है-यथा-

तप तीरथ व्रत साधना, अमित प्रकारन होइ।

बलिहारी सतनाम की , जेहि सम और न कोइ।।

गुरू निष्ठा, गुरू भक्ति पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया भक्ति, साधना का सहज रूप में उन्होंने कृतियों में दर्शाया है।

दिव्य रचनायें-

1. सुख सागर, 2. रतन ग्यान, 3. ग्यान सरोवर, 4. भागवत दशम स्कन्द, 5. ककहरानामा, 6. शब्दावली

ठसके अतिरिक्त हनुमान स्तुति, होली, आरती भी अन्य रचनाओं की भी सम्प्रदाय अन्तर्गत चर्चा की जाती है। इन रचनाओं का मुख्य बिषय अध्यात्म है। नेवलदास ने अवधी भाषा में भाव प्रकट किया है। अन्य भाषाओं के शब्दों का भी समावेश हुआ है।

भवानी दास

भवानीदास का जन्म बाराबंकी जिलान्तर्गत बहरेला नामक ग्राम में हुआ था। ये क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए। इनके दीक्षा गुरू समर्थ साईं जगजीवन साहेब थे। आपको अजपा जाप सिद्ध था। श्वांस प्रश्वांश मान सुमिरन के कारण इन्हें परमहंस कहा जाता था। इन्होंने जीवन भर बच्चों की भांति अपना जीवन व्यतीत किया। ये रात-दिन बच्चों के साथ खेलते रहते थे। एकांत में रहकर ये साधना करते थे। बाह्याड़म्बर को न मानते हुए भौतिकता से विलग रहते थे। मोह-माया, मान-अपमान, अभिमान इनमें न के बराबर था। ग्राम्य जीवन से दूर रहकर जगल में निर्जन स्थान पर रहकर साधना करते थे। कुछ लोगों ने इन्हें जड़ भरत की भाँति सिद्ध माना है। - ये पाखण्ड़ विरत थे। यथा-

बस्ती तजि जंगल में जाई कैं बसेरा कियौ।

सति व्रत लियो तजि पाखण्ड़ बजारही।।

छुःखी, दीन, जो भी जाये इन्होंने सबकी सहायता किया।

ये शीत, धूप सर्वदा समान सहन करते थे। इन्होंने अपने लिये मंड़प, समाधि के निर्माण करने को अस्वीकार कर दिया था।-

मंड़प समाधि बनवायो, यदि हेत नाहीं।

बानि है तपी की शीत धाम सहा करी।।

सत्तनाम के अतिरिक्त और अन्य कार्य नहीं किया।
सत्तनाम छाड़ि सत्तनाम के न कीनो और चाकरी।

मेड़नदास

मेड़नदास का जन्म बाराबंकी जिले के अटवा नामक ग्राम में हुआ था। इन्होंने समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब से गुरूपदेश (मंत्र) ग्रहण कर उपासना की थी। इनमें सतगुरू के प्रति बड़ी निष्ठा, अपूर्व भक्ति थी। इनका जीवन सहज, सरल था। ये उच्च कोटि के नामोपासक संत थे।

माधवदास

माधवदास का जन्म बाराबंकी जनपद के कोटवा रोड़ पर स्थित हथौंधा नामक ग्राम में हुआ था। ये ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए । इन्होंने समर्थ साईं जगजीवन साहेब से दीक्षित होकर साधना की थी। इन्होंने जीवनभर ब्रह्मचर्य रहकर जीवन व्यतीत किया था। अपने हाथ से कार्य करके जो भी अन्न सामग्री उत्पन्न होता था उसी का प्रयोग करते थे। आये हुए अभ्यागतों का स्वागत करना इनका प्रतिदिन का काम था। एक बार हथौंधा के राजा साहेब अधिक भूमि इनको दान में देना चाहे किन्तु इन्होंने दान में लेने से अस्वीकार कर दिया। कि़ु समाधि निर्माण हेतु केवल तीन हाथ भूमि ही ग्रहण की। निर्वाणोपरान्त आज भी आज भी इसी भूमि पर इनकी समाधि विद्यमान है। इन्होंने साधना के लिये नाम सुमिरन को अधिक महत्व दिया। हथौंदा में निवास करते हुये नाम सुमिरन, स्मरण ध्यान पर अधिक बल दिया। आपके अनुसार नाम ही साधना का मूल तत्व है। उन्होंने सुमिरन को ही तीर्थ, व्रत, होम, जप, तप, स्नान, वेद, शास्त्र, स्मृति, पुराण सब कुछ माना। यथा-
सुमिरन तीरथ वरत, होम, जप, तप अश्नाना।
सुमिरन विद्या वेद शास्त्र असम्रती पुराना।।
निःसंदेह माधवदास का सत्तनामी सम्प्रदाय में महत्वपूर्ण स्थान है।

शिवदास

शिवदास पंजाब के रहने वाले पंजाबी थे। आपके दीक्षा गुरू समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब थे। जव ये साहेब के सम्मुख आये तो इनके बाल और नाखून बहुत बड़े थे। सवामी

जी ने नाई बुलाकर बाल और नाखून कटवाकर इन्हें बीजमंत्र देने के उपरान्त इन्हें गुरू भाईयों के यहाँ जाकर भेंट करके सत्संग करने की आज्ञा दी। सतगुरू आज्ञा शिरोधार्य करके इन्होंने गुरू भाईयों का दर्शन सत्संग किया जिससे इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ। इन्होंने विरक्त जीवन व्यतीत किया। सांसारिक सुख, वैभव, माया से उपराम होकर आजीवन नाम साधना में रत रहे।

पियारेदास

पियारेदास बाराबंकी जिलान्तर्गत जरौली नामक ग्राम में उत्पन्न हुए। ये मसलमान धुनिया थे। उन्होंने समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब से गुरू मंत्र लिया था।ये सुमिरन, ध्यान, भजन में रमे रहते थे। राग, द्वेष से विरत सबके प्रति सम भाव रखते थे। इनका मानवतावादी दृष्टिकोण था।

उन्होंने आजीवन नाम की कमाई की। गुरूकृपा से इनमें अद्‍भुत आध्यात्मिक ज्ञान था। एक बार दूलनदास गुरू सेवा हेतु कोटवाधम गये। स्वामी जी ने दूलनदास को पियारेदास (जरौली) जाकर भक्ति चर्चा, सत्संग आदि के लिये आज्ञा दी। गुरू आज्ञा स्वीकार करके दूलनदास गुरू भाई (पियारेदास) के साधनास्थल जरौली आए। गुरू भाई से मिलने के लिये तीन बार पुकारा पियारेदास के बोलने से पूर्व ही उनकी (पियारेदास) धुनकी से दूनलदास के सत्कार में तीन बार 'सत्‌नाम' शब्द की ध्वनि सुनाई पड़ी। कुछ क्षण बाद पियारेदास अन्दर से बाहर आये। इस घटना से दूलनदास अधिक आश्चर्यचकित हुये। पुनः दोनों गुरू भाई कोटवा जाकर सतगुरू चरण सिर झुकाते हुए सादर दर्शन कर बन्दगी किया। ऐसे महान संत पियारेदास जी थे।

मृत्युरान्त इनकी समाधि जरौली में विद्यमान है। प्रतिदिन संध्या समय आरती की व्यवस्था है। आरती, भजन, सत्संग के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है।

बालदास

बालदास का जन्म बाराबंकी की जिलान्तर्गत अमरापुर नामक ग्राम में कोरी कुल में हुआ। आपने सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक समर्थ साईं जगजीवन साहेब से दीक्षा ग्रहण करके साधना की। शूद्र कुल में उत्पन्न होने के गाँव के लोग इन्हें अनादर की दृष्टि से देखते थे। ब्राह्मण–क्षत्रिय उच्च कुलोद्‌भव अधिक अपमान करते थे। अतः इनके मृत्यु होने के बाद इनके शव तिरस्कार उपेक्षा करके मिट्‌टी में मूँद दिया। इसका परिणाम ऐसा हुआ कि तीन बर्ष तक अनवरत्

अमरानगर में जलवृष्टि न होने के कारण भूखमरी पड़ गयी। अन्न-जल का अभाव होने से अधिक संख्या में लोगों की मृत्यु होने के कारण चर्तुदिक हाहाकार मच गया। इस संकट से मुक्ति पाने के लिए लोग कोटवाधीश जगजीवन साहेब के पास जाकर लोग सादर बन्दगी करके आज्ञा पाकर बैठ गये। समर्थ साईं जी ने द्रवित होकर पुनः बालदास के समाधि को सादर निर्माण हेतु सबको आदेशित किया। आज्ञा शिरोधार्य करके लोग अमरापुर आये, और सब लोगों ने मिलकर बालदास की समाधि का ससम्मान करवाया। साईं जी के आशीर्वाद से अपार मुसलाधार जलवृष्टि हुई। सम्पूर्ण जनमानस आहलादित हुआ, ऐसा लगा जैसे लोगों को नया जीवन प्राप्त हुआ ।

बालदास नामोपासक संत थे। उन्होंने आराध्य को सर्वव्याप्त घट-घटवासी कहा है। यथा-

जाको खोजत तू खलक मुलुम में, सो घट भीतर अहै समाना।

उनके अनुसार निर्गुण, निराकार, ब्रह्म का न तो कोई रूप है और न उसके ओठ, दाँत, चरण और काया ही है। यहाँ तक कि बिना रसना के गुण बयान करता है। मरम बृहत् सत्य है, न वह निर्गुण है न सगुण वह सबसे मुक्त सचराचर में विद्यमान है।-

ओठ न दात, चरण नहीं काया। बिन जिभ्या के गावै तान।
ना वह दिवस न ही ऊँधे सियाना वहाँ चन्द्र नहीं मान।।
ना वह निर्गुण ना वह सरगुन सो पद सत समान।।

मंशादास

मंशादास गोण्ड़ा जिलान्तर्गत ग्वारिच, मिरचौर के रहने वाले थे। इनका जन्म मोची वंश में हुआ था। इनके सतगुरू सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रख्यात संत समर्थ साईं जगजीवन साहेब थे। निम्न कुल में उत्पन्न होने के बाद भी साईं जी ने इन्हें राजपूत जाति के समान सम्मानित किया। चौदह गद्‌दियों में इन्हें समाद्धृत करवाकर सबके समान सत्कार करवाया।-

उनहू ते उत्तम सो दीन्हेउ पद और एक।
गद्‌दी पुनि चौदहों में बैठयो मानौ मंच है।।

कृपादास

संत कृपादास खरथरी ग्राम वासी थे। ये ब्राह्मण वंश में अवंतस थे। इन्होंने जगजीवन साहेब से गुरू मंत्र लेकर भजन किया था। ये बड़े विनम्र-शान्ति प्रकृति थे। अधिक बोलने की अपेक्षा

अधिक शांतिमय जीवन व्यतीत करते थे। ये अधिक मिष्टभासी थे। नामोपासना में इनकी पूर्ण आस्था थी।

कोई पियत नाम रस प्याला। मन मोर भयो मतवाला।
बिन कर चलै, जपै बिन जिभ्या, ऐसा अजयामाला।।
हरदम दम तार न टूटै, पियत बँक कर नाला।।
नाम रसायन जो कोइ पीवे, सोई मथो मतवाला।।
पंडित ज्ञानी पिये न जाने, झूठ बजाये गाला।।
त्रिकुटी मँह ध्याान लगावे, लिए शब्द का माला।।
छूट जाय सम का ड़र तबही, निकट न आवे काला।।
गाँव नगर में डंका बाजे, सतगुरू भयो दयाला।।
कृपादास मगन है बैठे, खुल गये अनुभव ताला।।

बदलीदास

बदलीदास का जन्म बाराबंकी जनपदान्तर्गत अटवा नामक ग्राम में हुआ था। ये कुर्मी जाति के थे। समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब से दीक्षा ग्रहण करके साधनारत हुए। इन्होंने सतगुरू से छल, कपट, अभिमान रहित जीवन व्यतीत कर निरन्तर साधना में मन लग जाने के लिए याचना की। सतगुरू कृपा से अनवरत ये साधना, सुमिरन, ध्यान, भजन में अनुरक्त रहे, मन सदैव नाम साधना में लगा रहा। उनके अनुसार सतनाम जाने बिना मन का पवित्र-निर्मल हो पाना असंभव है, क्योंकि भजन बिना जन्म-जन्मान्तर तक जीवन दारूण विपत्ति सहता हुआ सुखमय जीवन निर्वाह करने में असमर्थ हो जाता है।-

बिना जाने सतनाम कबहुँ न निर्मल होई मन।
लहै न सुख विश्राम, जन्म जन्म दारून विपत्ति।।

उन्होंने वाह्याड़म्बर को निरर्थक माना है। उनका कहना है कि अक्षत, पुष्प चढ़ाकर पाषाण की उपासना करना निरर्थक है। बिना सतनाम आराधना किये सम्पूर्ण आड़म्बर करते हुए कर्म करना बंधक है। उनकी दृष्टि में भवसागर पार उतरने का सबसे सुगम साधन राम-नाम स्मरण है। इसके अतिरिक्त अन्य साधन तीर्थ, व्रत, दान कर भवनिधि निस्तारण कर पाना अत्यंत कठिन है। अस्तु उनका कहना है के राम-नाम नोका पर चढ़कर ही भवसागर से उतर पाना सरल मार्ग है। यथा-

-कलयुग मँह साधन नहीं, नहीं तीरथ व्रत दान।

जो उतरन भव चहै, राम-नाम जलयान।।

उनका पूर्ण विश्वास है कि जिसके हृदय में सतगुरू के प्रति प्रेम की वृद्धि हो जाती है और नाम-स्मरण से अनुराग हो जाता है, उसे सर्वदा तप, व्रत, तीर्थ का सम्पूर्ण पुण्य फल प्राप्त हो जाता है। तथा अनुदिन सुख प्राप्त होता है।-

-तप, व्रत, तीपथ नेम, नाम लीन्ह तिन्ह सब किये।

सतगुर जेहि दृढ़ प्रेम, बाढ़त अतिदिन दिन सुख।।

टाप द्वारा विरचित 'अनुभव प्रकाश' रचना है, किन्तु अभी तक कुछ पंक्तियाँ ही उपलब्ध हो पायी हैं शेष अप्राप्त हैं।

आपके ब्रह्मलीन होने के बाद समाधि का निर्माण हुआ है, जो अटवा में स्थित है। सन्ध्या बेला में रोज आरती विधान है। आरती के बाद प्रसाद वितरण भी किया जाता है।

रामदास

रामदास का जन्म बाराबंकी जिलान्तर्गत अटवा नामक गाँव में कुर्मी वंश में हुआ था।

-अटवा बास मुकाम करि। कुर्मिवंश सबहिन कहेउ।।

आपने समर्थ साईं सतगुरू जगजीवन साहेब से दीक्षा ग्रहणकर साधना में प्रवृत्त हुए। दीक्षोपरान्त गुरू-आज्ञा से आप अटवा में जीवनपर्यन्त निवास करते हुए सुमिरन, ध्यान, भजन में निरंतर तल्लीन रहे। नाम-स्मरण ही आपकी प्रतिदिन की दिनचर्या थी। आपकी सत्संग में अधिक रूचि थी। आप सांसारिक मोहमाया से विरत थे। निर्गुण-निराकार ही उपासना ही आप का मूलोद्द्देश्य रहा। जगत के प्रपंच से दूर रहते थे। इनके शिष्यों में भोलादास (क्षत्रिय) प्रमुख थे।

-भोलादास क्षत्रीमयो तिनके सुमर शिष्य।

आयो न निकट फौज माया की परान्यो है।।

कायमदास

कायमदास बाराबंकी जनपद के रसूलपुर नामक ग्राम में उत्पन्न हुए। ये पठान जाति के थे। सत्तनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक समर्थ साईं जगजीवन साहेब के परम शिष्य थे। दीक्षोपरान्त ये रसूलपुर आकर साधना में लग गये। थोड़े ही समयोपरान्त ये अच्छे संत हुए। ये नाम

साधना के पूर्णरूपेण पोषक थे। इनमें अपूर्व गुरू भक्ति भावना थी। इनका जीवन कृत्रिमता से पृथक था। सम्पूर्ण जाति को एक समान समझते थे। ये मानवतावादी विचारधारा के थे। सम्प्रदाय अन्तर्गत इनकी गणना सिद्ध संतों में की जाती है। मृत्युपरान्त ये रसूलपुर में समाधिस्थ हुए। समाधि दर्शन के लिए बड़ी भीड़ लगी रहती है।